VOL- VII ISSUE- XII DECEMBER 2020 PEER REVIEW e-JOURNAL IMPACT FACTOR 6.293 ISSN 2349-638x

'कोसी का घटवार' कहानी में व्यक्त गुसाईं का लछमा के प्रति अद्वितीय प्रेम

डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे
प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, हिंदी विभाग
शिवजागृति वरिष्ठ महाविद्यालय, नलेगांव
ता. चाकुर जि. लातूर (महाराष्ट्र)।

नई कहानी के प्रतिनिधि रचनाकार शेखर जोशी का जन्म सन 1932 में अलमोड़ा जनपद ओरिया गाँव के एक पहाड़ी किसान परिवार में हुआ। पिताजी का नाम दामोदर जोशी और माताजी का नाम हरिप्रिया जोशी था। प्रारंभिक शिक्षा देहरादून और अजमेर में हुई। 1965 से 1986 तक इलाहाबाद में सैनिक औद्योगिक प्रतिष्ठान में नौकरी की। अपने बुजुर्गों से सुनी कहानियों का प्रभाव उनके साहित्य पर देखा जाता है।

नई कहानी को गाँव से जोड़ने का श्रेय शेखर जोशी को जाता है। पहाड़ी क्षेत्र का जीवन संघर्ष, गरीबी, यातना, मजदूरों के हालात, सामाजिक समस्याएँ, धर्म और जाति में जुड़ी रूढ़ियाँ ये सभी उनकी कहानियों के विषय हैं। कोसी का घटवार, बदबू, मेंटल, दाज्यू आदि उनकी चर्चित कहानियाँ हैं। कोसी का घटवार, साथ के लोग, हलवाहा, नौरंगी बीमार है, मेरा पहाड़, एक पेड़ की याद आदि उनके चर्चित कहानी संग्रह हैं। उनके साहित्यिक योगदान को देखते हुए इन्हें 1955 में धर्मयुग द्वारा आयोजित कहानी प्रतियोगिता का प्रथम पुरस्कार, महावीर प्रसाद द्विवेदी पुरस्कार, साहित्य भूषण सम्मान, पहाड़ सम्मान, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान आदि पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। 'कोसी का घटवार' शेखर जोशी की एक चर्चित कहानी है जिसमें कहानीकार ने ग्रामीण एवं पहाड़ी क्षेत्र में रहनेवाले गुसाई के लछमा के प्रति अद्वितीय प्रेम को चित्रित किया है। जहां प्रेम में बिना किसी स्वार्थ के समर्पण एवं त्याग की भावना होती है वहां प्रेम उदात्त एवं व्यापक धरातल पर पहुंच जाता है। इस कहानी को समझने के लिए हमें निम्नलिखित बिंदुओं पर विचार- विमर्श करना आवश्यक होगा।

1) कथावस्तु :-

' कोशी का घटवार' कहानी में गुसांई और लछमा के उद्दात प्रेम को प्रस्तुत किया गया है। गुसांई और लछमा दोनों एक दूसरे से प्रेम करते हैं। गुसांई अनाथ है और फौज में नौकरी करता है। लछमा का पिता यह सोचकर कि," जिसके आगे-पीछे भाई-बहन नहीं, माई-बाप नहीं, परदेस में बंदूक की नोक पर जान रखनेवाले को छोकरी कैसे दे दे हम ?"1 वह लछमा की शादी अन्य लड़के के साथ कर देता है। एक बच्चा होने के बाद लछमा विधवा हो जाती है और उसे मैके आकर रहना पड़ता है। पिता का निधन होने के बाद चाचा-भतीजे सोचते है कि लछमा अपना हक मांगेगी, लेकिन लछमा कहती है कि मुझे पिताजी के हिस्से का कुछ नहीं चाहिए। उधर पंद्रह साल फौज में नौकरी करने के पश्चात गुसांई गांव में आकर अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए गेहूं पीसने का घट (पनचक्की) लगाता है। एक दिन चक्की पीसने आयी हुई लछमा के साथ गुसांई की मुलाकात होती है। दोनों में वार्तालाप होता है। गुसांई भी अविवाहित है, अकेलेपन से पीड़ित है। वह चाहकर भी विधवा लछमा के साथ विवाह नहीं कर पाता क्योंकि समाज की मान्यता उसे ऐसा करने नहीं देती। कहानी में दोनों के अकेलेपन की पीड़ा को भी व्यक्त किया गया है।

2) मूल संवेदना :-

कहानीकार ने इस कहानी में एक दूसरे के प्रति प्रेम करनेवाले युवक और युवती के प्रेम में कैसे असफलता आती है और फौज की नौकरी करने के पश्चात गुसांईं बिना विवाह के अपना अकेला जीवन जीता है और उधर उसकी प्रेमिका लछमा विधवा होकर अपने एक बच्चे के साथ गरीबी की पीड़ा में जीने के लिए विवश हो जाती है। दोनों का जीवन अकेलेपन से भरा हुआ है। गरीबी एवं दरिद्रता और अकेलेपन की पीड़ा के बावजूद गुसाईं और लछमा की एक दूसरे के प्रति अपनेपन की भावना दोनों के चरित्र को उदात्त बना देती है। यही कहानी की मूल संवेदना।

3) ग्रामीण पहाड़ी परिवेश का चित्रण :-

शेखर जोशी ने अपनी कहानी 'कोसी का घटवार' में पहाड़ी परिवेश के जीवन को प्रस्तुत किया है। पहाड़ी क्षेत्र में मनुष्य का जीवन किस प्रकार संघर्षशील रहता है। गरीबी की यातना और मजदूरी की हालत में उन्हें विविध समस्याओं का कैसे सामना करना पड़ता है, इसे व्यक्त किया है। कहानी में नदी, नदी के आसपास का परिवेश आदि का भी वर्णन मिलता है। साथ-ही-साथ ग्रामीण जीवन में लोगों की मान्यताएं कई बार मनुष्य के जीवन में कैसे बाधा बनती है और विधवा को किस प्रकार कठिन यातनाओं को लेकर जीना पड़ता है, इसका भी वर्णन कहानीकार ने इस कहानी में किया है। प्रेम नगर में ही नहीं ग्रामीण एवं पहाड़ी संघर्षशील जीवन में भी किस प्रकार अपनी श्लीलता एवं उदात्तता को बनाए रखता है इसे भी यहां दर्शाया गया है। साथ-ही-साथ यह कहानी एक ग्रामीण क्षेत्र के संघर्षशील जीवन को बयान करती है।

4) प्रेम में असफलता :-

कहानी में गुसांईं और लछमा दोनों का एक दूसरे के प्रति प्रेम था। जंगल में काफला के फल खाते समय खेल-खेल में फलों की छीना झपटी करते समय पके, गहरे लाल-लाल काफला के पीसे हुए फलों का गाढ़ा लाल रस जब गुसाईं के पेंट पर गिर जाता है और उसकी पेंट खराब हो जाती है तब वह इसे अपने पास रखने की बात करती है तब गुसांईं कहता है कि,"... तेरे लिए मखमल की कुर्ती ला दूंगा, मेरी सुवा !"2 यह लछमा के प्रति गुसांईं के प्रेम को ही व्यक्त करता है। लेकिन लछमा को मखमल की कुर्ती तो किसी और ने ही पहनाई, क्योंकि लछमा का पिता गुसांईं को अनाथ और फौज में भर्ती रहने के कारण अपनी बेटी की शादी उसके साथ न कर अन्य किसी लड़के के साथ करता है और यहाँ गुसांईं और लछमा दोनों अपने प्रेम में असफल हो जाते हैं। एक तरफ गुसांईं फौज से आने के बाद बिना विवाह के अकेला जीवन जीने के लिए विवश होता है, तो दूसरी ओर लछमा भी विधवा होकर अपने बच्चे के साथ अकेलेपन में जीने लगती है।

5) अकेलेपन की पीड़ा :-

कहानी का पात्र गुसाईं अपने प्रेम में असफल होने के बाद फौज में पंद्रह वर्ष की नौकरी कर वापस गांव आता है और अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए कोसी नदी के किनारे अपना घट चलाता है। वैसे तो पैंट पहनने की महत्वाकांक्षा लेकर गुसांईं फौज में गया था, लेकिन फौज से लौटा तो पैंट के साथ-साथ जिंदगी का अकेलापन भी उसके साथ आ गया। अपना अविवाहित जीवन उसे हमेशा खलने लगता है। कई बार उसको यह अकेलापन काटने लगता है। ऐसे समय उसका यह सोचना कि," सुखी नदी के किनारे का यह अकेलापन नहीं, जिंदगी-भर साथ देने के लिए जो अकेलापन उसके द्वार पर धरना देकर बैठ गया है, वही। जिसे अपना कह सके, ऐसे किसी प्राणी का स्वर उसके लिए नहीं। पालतू कुत्ते-बिल्ली का स्वर भी नहीं। क्या ठिकाना ऐसे मालिक का, जिसका घर-द्वार नहीं, बीवी-बच्चे नहीं, खाने-पीने का ठिकाना नहीं..."3 यह उसके अकेलेपन की पीड़ा को व्यक्त करता है। लछमा का हठ और उसके प्रति अटूट प्रेम ने ही गुसाईं को अकेला बना दिया था।

6) विधवा समस्या :-

विधवा स्त्री की ओर समाज का देखने का एक अलग ही दृष्टिकोण होता है। हर एक उसकी ओर शोषण

की दृष्टि से देखता है। न बाहरवाले उसे सहानुभूति से देखते हैं, न ससुरवाले। विधवा नारी को नरकीय वेदनाओं को भुगतना पड़ता है। लछमा के पिता ने लछमा के मन के विरुद्ध उसकी किसी अन्य लड़के के साथ शादी की थी, लेकिन वह भी एक बेटा होने के बाद गुजर गया और लछमा विधवा हो गई। विधवा का जीवन बडा दुखदाई होता है। जब गुसाईं को लछमा के गले में सुहाग चिन्ह दिखाई नहीं देते और वह उसकी तरफ हतप्रभ-सा देखता है, तब अपने आँसू पोंछती हुई अपनी वेदना को बताते हुए लछमा का कहना कि," जिसका भगवान नहीं होता, उसका कोई नहीं होता। जेठ-जेठानी से किसी तरह पिंड छुड़ाकर यहाँ माँ की बीमारी में आई थी, वह मुझे छोड़कर चली गई। एक अभागा मुझे रोने को रह गया है, उसी के लिए जीना पड़ रहा है। नहीं तो पेट पर पत्थर बांधकर कहीं डूब मरती, जंजाल कटता।"4 यह विधवा नारी के जीवन में आनेवाली भयावह समस्याओं को व्यक्त करता है।

7) निश्चल प्रेम की अभिव्यक्ति :-

कहानी में गुसांईं का लछमा के प्रति निश्चल प्रेम व्यक्त होता है। वह संपूर्ण जीवन अविवाहित रहता है लेकिन जब विधवा लक्ष्मा को देखता है, तो उसके प्रति उसके मन में सहानुभूति आ जाती है। वह चाहकर भी सामाजिक बंधनों के कारण उसके साथ विवाह नहीं कर पाता अपितु उसके प्रति सहानुभूति दिखाते हुए उसे पैसों की सहायता करना चाहता है लेकिन वह सहायता लेने से जब इंकार करती है, तब उसका अपनी दुख भरी आवाज में कहना कि," दुःख-तकलीफ के वक्त ही आदमी आदमी के काम नहीं आया, तो बेकार है ! स्साला ! कितना कमाया, कितना फूंका हमने यह जिंदगी में, है कोई हिसाब ! पर क्या फायदा ! किसी के काम नहीं आया। इसमें अहसान की क्या बात है ? पैसा तो मिट्टी है स्साला ! किसी के काम नहीं आया तो मिट्टी, एकदम मिट्टी !"5 इतना कहने के बाद भी लछमा जब उसकी सहायता नहीं लेती तब अपने घट के अंदर जाकर " उसने जल्दी-जल्दी अपनी निजी आटे के टीन से दो-ढाई सेर के करीब आटा निकालकर लछमा के आटे में मिला दिया और संतोष की एक सांस लेकर वह हाथ झाडता हुआ बाहर आकर बांध की ओर देखने लगा।"6 उसका यह बर्ताव लछमा के प्रति अपने निश्चल प्रेम को व्यक्त करता है। उसके इस प्रेम में कोई स्वार्थ नहीं दिखाई देता।

8) गरीबी एवं दरिद्रता का चित्रण :-

पति के मरने के पश्चात लछमा अपना कष्टदाई वैधव्य जीवन जीने लगती है। गरीबी और दरिद्रता से वह परेशान है। एक छोटा सा अपना बच्चा उसका भी वह पालन-पोषण ठीक से नहीं कर पाती। जब गुसांईं और लछमा की मुलाकात होती है तब बेटे को भूखा देख बनाई हुई रोटी गुसांईं उसकी तरफ देता है, तो अपनी गरीबी छिपाने के लिए वह कहती है कि," न-न, जी ! वह तो अभी घर से खाकर ही आ रहा है। मैं रोटियां बनाकर रख आई थी।"7 लेकिन वास्तविकता का तो पता तब चलता है जब बेटा रोते हुए कहता है कि यह ऐसी ही कह रही है, कहां रखी थी रोटियां घर में ? जब गुसाईं रोटी और थोड़ा सा गुड बच्चे को देता है और बच्चा उसे खाने लगता है, तो बच्चे की तरफ देखते हुए गुसांईं कहता है कि कुछ साग सब्जी होती तो बेचारा एक आधी रोटी और खा लेता तब लछमा का कहना कि," ऐसी ही खाने-पीनेवाले की तकदीर लेकर पैदा हुआ होता तो मेरे भाग क्यों पड़ता ? दो दिन से घर में तेल-नमक नहीं है। आज थोड़े पैसे मिले हैं, आज ले जाऊंगी कुछ सौदा।"8 यह उसकी गरीबी एवं दरिद्रता को स्पष्ट करता है।

9) मानसिक अंतर्द्वंद :-

गुसाईं के मन में लछमा के प्रति अटूट प्रेम है। वह उसका इंतजार करते-करते पूरी जिंदगी विवाह नहीं करता। जब लछमा से मुलाकात होती है तब उसका वैधव्य देखकर और भी वह परेशान हो जाता है। साथ में एक छोटा सा बेटा और लछमा का गरीबी एवं दरिद्रता से त्रस्त होने से वह उसकी सहायता करना चाहता है। उसे अपनाना चाहता है लेकिन बेटे के साथ विधवा को स्वीकारने की समाज

स्वीकृति नहीं देता यह जानकर और लछमा को भी सामाजिक समस्याओं का सामना करना न पड़े इसीलिए उसका स्वीकार भी नहीं करता। लेकिन जब वह चुपचाप लछमा की तरफ देखते रहता है तब लछमा को भी लगता है कि न जाने वो क्या कहना चाहता है। लेकिन गुसाईं कहता है" कभी चार पैसे जुड़ जाएं, तो गंगनाथ का जागर लगाकर भूल-चूक की माफी मांग लेना। पूत-परिवारवालों को देवी-देवता के कोप से बचा रहना चाहिए।" इतना कह कर वहाँ से चला जाता है। गुसाईं अपने मन में होते हुए भी लछमां का स्वीकार नहीं कर पाता सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं के कारण वह मानसिक अंतर्द्वंद्व में उलझ जाता है।

10) शीर्षक की सार्थकता :-

पंद्रह वर्ष फौज में नौकरी करने के पश्चात जब गुसांईं वापस आता है, तब अकेलापन दूर करने के लिए वह गेहूं पीसने का घट (पनचक्की) चलाता है। जिस प्रकार यह घट आटा पीसकर सब की सहायता करता है उसके बदले में कुछ पाने की आशा नहीं रखता, ठीक उसी प्रकार गुसांईं भी लछमा के प्रति अपनेपन की भावना रखता है। उसके मन में पाने की नहीं सिर्फ देने की भावना दिखाई देती है। वह केवल उसकी आर्थिक सहायता करना चाहता है, लेकिन सहायता करना उसके प्रारब्द में नहीं है। कोसी नदी के किनारे घट (पनचक्की) लगाना यह शीर्षक को सार्थक बनाता है। यहां गेहूँ पीसने का घट (पनचक्की) निश्चल प्रेम के प्रतीक के रुप में व्यक्त हुआ है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार शेखर जोशी ने अपनी कहानी 'कोसी का घटवार' में गुसांईं और लछमा इन दोनों के माध्यम से एक निश्चल प्रेम की अभिव्यक्ति की है जहां कहीं भी अश्लीलता एवं शरीरी प्रेम नजर नहीं आता। जहाँ गुसाईं पंद्रह वर्ष फौज में नौकरी कर वापस आता है, तो अपने अकेलेपन को दूर करने के लिए गेहूं पीसने का घट लगाता है। उसने अब तक अपना विवाह नहीं किया जिससे अकेलापन ही उसके जीवन का अंग बन चुका है। दूसरी तरफ लछमा के पिता ने लछमा की शादी गुसांईं के साथ न कर किसी अन्य लड़के के साथ की। शादी के बाद पति मरने से वह विधवा हो गई। पीछे एक बेटा और अपनी गरीबी तथा दरिद्रता से पीड़ित जीवन जीते समय किस प्रकार की यातनाओं को उसे सहना पड़ता है इसे दर्शाया है। गुसाई अपनी सहानुभूति के साथ लछमा की आर्थिक सहायता करना चाहता है, लेकिन वह उसे स्वीकार नहीं करती। ऐसी द्वंद्वात्मक मानसिकता को कहानीकार ने यहाँ चित्रित किया है। इस कहानी में से हमारे सामने कुछ निष्कर्ष बिंदु आज जाते हैं। जैसे-

- यह कहानी गुसाईं और लछमा के असफल प्रेम को व्यक्त करती है।
- समाज में विधवा नारी को किस प्रकार नरकीय वेदनाओं से गुजरना पड़ता है और उसमें गरीबी एवं दरिद्रता जीवन जीना किस प्रकार मुश्किल कर देती है यह लक्षमा के जीवन से स्पष्ट होता है।
- किसी का भी जीवन अपने जीवन साथी के बिना पूरा नहीं होता चाहे वह स्त्री हो या पुरुष हो।
- इस कहानी में लछमा का अभाव किस प्रकार गुसाईं के जीवन में अकेलापन भर देता है और अकेलेपन की पीड़ा कितनी भयावह होती है इसे दर्शाया गया है।
- इस कहानी में गुसाईं का लछमा के प्रति निश्चल प्रेम अभिव्यक्त हुआ है।
- यह कहानी सामाजिक मान्यताओं और परंपराओं के कारण लछमा के प्रति गुसाईं के मानसिक परतों को खोलते हुए उसके अंतरिक द्वंद्व को व्यक्त करती है।
- यहां गेहूं पीसने का घट अपने आप में निश्चल प्रेम का प्रतीक होने की ओर भी इशारा करता है।

कुल मिलाकर इस कहानी के माध्यम से गुसांईं और लछमा के प्रेम की असफलता, दोनों के जीवन में छाया हुआ अकेलापन तथा समाज में विधवा स्त्री की पीड़ा और गरीबी तथा दरिद्रता से भरा हुआ जीवन आदि बिंदुओं को विश्लेषित करने का कहानीकार ने प्रयास किया है।

संदर्भ सूची :-

1) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.91
2) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.91
3) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.90
4) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.94
5) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.98
6) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.98
7) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.97
8) संपा.डॉ.बालाजी भुरे,डॉ.व्यंकट पाटिल - कहानी संकलन - प्र.सं. 2019, दिव्य डिस्ट्रीब्यूटर्स, कानपुर - पृ.97

Aayushi International Interdisciplinary Research Journal
ISSN 2349-638X
www aiirjournal.com